द्वारा लिखित लेखकमण्डल
शुक्रवार, 23 अक्टूबर 2009 13:27 -

□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□

“□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□”□ (1□□□□□□□□□ 1:5)

सम्पूर्णता बाईबलि में अंधकार उन बातों केसंदर्भ में कहा गया है जो ईश्वर केविरोध की बातें हैं। शैतान की शक्तियों को अंधकार की शक्तियां कहां गया है, अंधकार जहां भटकन है, अनश्चिता है और विनाश है, परन्तु यूहन्ना कहता है परमेश्वर ज्योतिहै। ज्योतिजो पवित्रता का प्रतीकहै, ज्योतिजिसमें कुछ भी छपि नहीं सकता। ज्योतिजो मार्गदर्शन करती है।

जीवन में अक्सर कठिन समय आते हैं जब हमें कोई राह नज़र नहीं आती, कठिन परिस्थितियां हम पर हावी हो जाती हैं। निराशा, हताशा केगहन अंधकार में हम डूबने लगते हैं। ऐसे समय में हमें इस बात का ध्यान रखना है कि परमेश्वर ज्योतिहै, वह हमारा मार्गदर्शन है। परमेश्वर की उपस्थिति में केवल प्रकाश है जहां अंधकार का कोई स्थान नहीं, जहां कोई भटकन नहीं।

आज विचार करें, जीवन में यदि किसी प्रकार की अनश्चितिता है, तनाव है, परिस्थितियां किसी दानव केसमान घेरे हुए है तो ऐसे में परमेश्वर की ओर ध्यान लगावें। दाऊद कहता है “ वही मेरे पथ का उजियाला है”। परमेश्वर की उपस्थिति की याचना करें। वह अपने प्रकाश से आपकेजीवन के प्रत्येकअंधकार को दूर करेगा।

□□□□□□□□□□□ हे पिता परमेश्वर हम तुझे अपना जीवन सौपते हैं, हमें अन्धकार से निकिलकर अपनी ज्योति से प्रकाशित कर, हमारा मार्गदर्शन कर। आमीन।